ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 116-117
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

वीरवर कुँवर सिंह और भोजपुरिआ लोक-समाज

डॉ0 अशोक कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान, कुँवर सिंह पी0जी0 कॉलेज, बलिया (उ0प्र0) भारत

भारत से अंग्रेजी राज को उखाड़ फेंकने के लिए लड़ी गयी आजादी की पहली लड़ाई का नेतृत्व बिहार में वीरवर कुँवर सिंह ने किया था। वहाँ सिपाहियों की बगावत में उनकी अच्छी–खासी भूमिका रही थी। यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि दानापुर के सिपाहियों ने उन्हीं की प्रेरणा से विद्रोह किया था। अंग्रेजी राज के विरुद्ध युद्ध में उतरने से पहले कुँवर सिंह ने लड़ाई की पूरी योजना बनाई थी और देशभर के राजे–रजवाड़ों को चिट्ठियाँ लिखकर उसमें शामिल होने का न्यौता भी दिया था। इतना ही नहीं, वे गुप्त रूप से हिन्दुस्तान भर में विद्रोहियों के सम्पर्क में भी थे। इससे कुँवर सिंह की छवि एक ऐसे सेनानायक और नेता की उभरती है, जिसके पास भारत को आजाद कराने की एक रणनीति और कूटनीतिक समझ थी।

ब्रिटिष सत्ता के विरुद्ध देशव्यापी संघर्ष की स्थिति बन रही थी, जिसका पूरा असर बिहार में भी था। कार्नवालिस की स्थायी भूमि प्रबंध–व्यवस्था के कारण बिहार की हालत बदतर हो गयी थी। बंगाल एवं बिहार के किसान, जमींदार एवं शिल्पकार दरिद्र हो गये थे, जिसका व्यापक विरोध बंगाल में 1770 के 'सन्यासी विद्रोह' के रूप में और बिहार के क्षेत्र में 'कोल विद्रोह' और 'संथाल विद्रोह' के रूप में उभरा था।

बिहार का क्षेत्र प्रारम्भ से ही अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध था। असमान नीति एवं किसान विरोधी नीति के कारण विद्रोह का स्वर तीव्र हो रहा था। छोटे–छोटे जमींदार एवं गरीब किसान तबाह थे। खेती में लागत मूल्य भी नहीं मिल पा रहा था। पादरी मार्टिन ने पटना एवं गया में भ्रमण के समय एक ब्राम्हण से पूछा था कि ब्राम्हण होकर तुम खेत क्यों जोत रहे हो? तो उसने उत्तर दिया कि अंग्रेजों ने हमारा देष लूट लिया है। हम अत्यन्त गरीबी में हैं। पटना से पालकी में बैठकर जाते हुए मार्टिन ने लोगों की आँखों में घृणा का भाव देखा था। उसने लिखा कि मैं जिस देषी व्यक्ति से मिलता हूँ वह मेरा शत्रु लगता है। इससे बिहार में लोगों की अंग्रेजी राज के प्रति वितृष्णा का पता चलता है। षाहाबाद के जगदीशपुर रिआसत के जमींदार कुँवर सिंह ने जनभावना का शत–प्रतिशत उपयोग अंग्रेजी राज को उखाड़ फेंकने की दिशा में किया था, इसमें सन्देह नहीं। जिन सिपाहियों ने इस संघर्ष में भाग लिया था, वे भी किसान परिवारों से ही जुड़े हुए थे।

जगदीशपुर रिआसत भोजपुरी क्षेत्र है। वीरता तथा देशभक्ति इसकी सांस्कृतिक विशेषता है। इसी कारण इसका नाम भोजपुर पड़ा। डॉ0 ग्रियर्सन ने लिखा है कि "भोजपुरी उस शक्तिशाली, स्फूर्तिपूर्ण और उत्साही जाति की व्यावहारिक भाषा है, जो परिस्थिति और समय के अनुकूल अपने को बचाने के लिए सदा प्रस्तुत रहती है और जिसका प्रभाव हिंदुस्तान के हर भाग पर पड़ा है। हिन्दुस्तान की सभ्यता फैलाने का श्रेय बंगालियों और बिहारियों को ही प्राप्त है। इस काम में बंगालियों ने अपनी कलम से काम किया और भोजपुरियों ने अपनी लाठी से।"

भोजपुरी क्षेत्र की जनता ने अपने स्वभाव के अनुसार देश के प्रत्येक कार्य में दिलोजान से भाग लिया है। इसका सच्चा प्रमाण है, भोजपुरिया लोक–साहित्य, जो जनता का साहित्य है। वीर–कुँवर सिंह इस लोक में उसके नायक हैं। बिहार में क्रांतिकारियों का गढ़ पटना था। इसका एकतात्र उद्देष्य था – अंग्रेजों को भारत से उखाड़ फेंकना, इसके नेता थे पीर अली। पीर अली ने फाँसी के तख्ते पर झूलते हुए कहा था – "तुम मुझे फाँसी पर लटका सकते हो, पर तुम मेरे आदर्शों की हत्या नहीं कर सकते। अगर मैं मरता हूँ तो मेरी जगह हजारों वीर पैदा होंगे, जो तुम्हारे राज को नश्ट कर देंगे।" विठूर और लखनऊ के स्वतंत्रता संग्राम के प्रचारक जगदीशपुर आये। कुँवर सिंह ने स्वतंत्रता के यज्ञ में सहायता मांगी, कुँवर सिंह पीछे नहीं रहे। इसमें सबसे महत्वपूर्ण यह है कि उन्होंने अपनी मुसलमान प्रजा को इस लड़ाई में अपने साथ जोड़े रखा और उन्होंने कुँवर सिंह का भरपूर साथ भी दिया। इससे वीर कुँवर सिंह एक धर्म निरपेक्ष नायक के रूप में उभरे, जिनके हृदय में अपनी प्रजा क लिए भरपूर जगह थी।

पीर अली की फाँसी से बिहार में असंतोष और आक्रोश की ज्वाला फैल गयी। विद्रोही सैनिकों को साथ लेकर कुँवर सिंह ने आरा पर धावा बोल दिया। अंग्रेज कप्तान इस असंतोष को किसी तरह दबाना चाहता था। उसने कुँवर सिंह को आरा प्रान्त का गवर्नर बनाने का प्रलोभन दिया, किन्तु कुँवर सिंह ने कहा कि जब तक प्राण रहेगा, मेरा मार्ग बदलने वाला नहीं है – कप्तान लिखे मिल/कुँवर सिंह आरा कै सूबा बनाइब रे। तोहफा देबों, इनाम देबों, तोहके राजा बनाइब दे।
बाबू कुँवर सिंह भेजले सनेसवा, मोसे ना चली चतुराई रे। जब तक प्रान रही तन भीतर, मारग नाहीं बदलाई रे।

जो इतिहाकार कुँवर सिंह को लेकर यह व्याख्या करते हैं कि उन्होंने अपनी रिआसत को बचाने के लिए मजबूरी

अनुरूपी लेखक

में अंग्रेजी राज के खिलाफ हथियार उठाया था, उन्हें क्षेत्रीय लोक–साहित्य को एक बार फिर से पढ़ना चाहिए। इतिहास–लेखन में क्षेत्रीय इतिहास को नकारा नहीं जा सकता और क्षेत्रीय इतिहास का सबसे प्रामाणिक स्रोत वहाँ की लोक–कंठ में जीवित लोक–साहित्य है। जिसमें कुँवर सिंह के त्याग और देशभक्ति की भावना प्रकट होती है।

कुँवर सिंह की लड़ाई जनता की लड़ाई थी। पूरा भोजपुरिया लोक–समाज उनके लिए प्राणों की आहुति देने को तैयार था। अंग्रेजी राज की ओर उनके सिर पर दस हजार का इनाम घोशित था, किन्तु किसी ने उन्हें धोखा नहीं दिया। वे वास्त में जनता के कुँवर थे। यहाँ तक कि स्त्रियों ने अपने पति को युद्ध के लिए ललकारती थीं और कुँवर सिंह का साथ नहीं देने वालों को धिक्कारती थीं। वे कहती कि चूड़ी पहनकर घर में बैठो, हम अपनी और अपने वतन की इज्जत रख लेंगे –लागे सरम–लाज घर में बइठ जाहु, मरद से बनि के लुगइया ए हरी। पहिरी के सारी चूरी, मुँहवा छिपाइ लेहु, राखि लेबि तोहरी पगरिया ए हरी।

जनता कुँवर सिंह के राज की कामना करती थी। वह उनके राज के बिना केसरिया बाना रंगने को तैयार नहीं थी – ''बाबू कुँवर सिंह तोहरे राज बिनु, अब न रंगइबो केसरिआ।''

जनता कुँवर सिंह के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ी। यही उनकी सबसे बड़ी ताकत भी थी। जो लोग 1857 की क्रांति को महज सिपाही विद्रोह कहकर उसकी व्यापकता को कम करने की कोशिश करते हैं और यह कहते हैं कि अंग्रेजी राज का ऋण न चुका पाने के कारण कुँवर सिंह ने बागियों का साथ दिया था, उन्हें कदाचित् अपनी भूल सुधार लेनी चाहिए, अन्यथा वे भोजपुरिया लोक–समाज की गुनाहगारों में गिने जाएंगे। वस्तुतः वह जन–क्रांति भारत की मुक्ति कामी जनता का मुक्ति–संग्राम था। इस संग्राम के लिए जनता ही धन का भी प्रबन्ध करती थी।

''लड़ब ना त का करबि, भाइन के हँसाइब। हाथी घोड़ा बेचि के सिपाहिन के खियाइब।।''

1857 की हमारी आजादी की लड़ाई पर अनेक बहसें होती रही हैं और तरह–तरह की व्याख्याएँ हुई हैं, किन्तु इससे राष्ट्रीय चेतना का जो दीप जला, वह कभी बुझा नहीं। सम्पूर्ण देश में एक राष्ट्रीय भावना, एक राष्ट्रीय एकता की भावना भी जागी, जो आज भी हमारी राष्ट्रीय पहचान बनी हुई है। वीरवर कुँवर सिंह ने भारत के स्वतंत्रता की जो अलख जगायी उसके महत्व को इसी से समझा जा सकता है कि ''दुनिया के इतिहास में कुँवर सिंह के अलावा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि किसी ने अस्सी साल की अवस्था में इतनी जबरदस्त लड़ाइयाँ लड़ी हों और अपनी औकात तथा सरजाम से कई गुना ज्यादा विजय पताका फहराई हो।''7 इसी नाते कुँवर सिंह आजादी की पहली लड़ाई के 'समर सरताज' हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रो0 श्याम बिहारी राय, वीर कुँवर सिंह, पृष्ठ – 58.
2. प्रो0 श्याम बिहारी राय, वीर कुँवर सिंह, पृष्ठ – 58.
3. श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, भोजपुरी के कवि और काव्य भूमिका, पृष्ठ–11.
4. डॉ0 श्रीधर मिश्र : भोजपुरी साहित्य–सांस्कृतिक अध्ययन हिन्दुस्तानी एकेडमी, पृष्ठ–199.
5. श्रीधर मिश्र : भोजपुरी लोकगीतों क विविध रूप पृष्ठ–155.
6. श्रीधर मिश्र : भोजपुरी लोकगीतों क विविध रूप, पृष्ठ–158.
7. वहुबचन, संयुक्तांक, 33–33, पृष्ठ –43.

*****